प्रातः क्लास 4-3-68 ओमशान्ति पिताश्री मन्मनाभव

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रितरूहानी बाप समझाये रहे हैं। पढ़ा रहे हैं। दुनिया नहीं जानती है कि सुप्रीम फादर जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है वह कोई पढ़ाने आते हैं। बाप तो कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाने आता हूँ। आत्माओं को पढ़ता हूँ। आत्मा राजयोग से यह देवी-देवता बनती है। राजाई पद पाती है। और पावन निर्विकारी श्री जरूर बनना पड़ता है। कल्प पहले भी तुम ही यह देवी-देवता सम्पूर्ण नि= निर्विकारी बने थे। शरीर भी तुम्हारा ऐसा गोरा था। फिर बदलता गया। तुम देवतायें सो फिर आकर आसुरी बने हो। आत्मा जो देवता थी वह असुर बनी है। सतोप्रधान आत्मा सो तमोप्रधान बनी है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान, आत्मा सतोप्रधान बनता है तो शरीर भी सतोप्रधान बनता है। जैसा सोना वैसा जेवर बनते हैं। आत्मा में खाद पड़ने से सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आतीगई है फिर शरीर भी ऐसे ही मिलते हैं। यह देवतायें तो सतोप्रधान थे। समय भी सतोप्रधान था। अभी तो समय भी तमोप्रधान है। इन (ल०ना०) के आत्मा में और शरीर में खाद पड़ गई है। देवी-देवतायें जो सतोप्रधान थे वही नीचे उतरते आये हैं। अभी तो यह हैं नहीं। सिर्फ प्रतिमा को लेकर भक्ति करते हैं। ब्रह्म तमोप्रधान मनुष्यों की तो भक्ति करनी नहीं होती है। पहले2 भक्ति करते हैं परमात्मा की जिसने देवता बनाया। जब जब तुम भक्ति बनते हो तब ही पूजा करते हो। अभी तो तुम पूज्य बन रहे हो। तुम पूजारी थे अव्यभिचारी पूजा करते थे। यह पता नहीं था ल०ना० जो पास्ट हो गये हैं वह इस समय भिन्न2 नामरूप से असुर हैं। अभी किसकी पूजा करते हैं? शरीर की। आत्मा तो है नहीं। आत्मा तो पुनर्जन्म लेते उतरती ही आई है ना। शरीर जो सतोप्रधान था वही बनाकर पूजते रहते हैं। तो पूजा किसकी करते हैं, तमोप्रधान तत्वों की। इन (जड़-चित्र) में आत्मा थोड़े ही है। सतयुग में तो यह चलते-फिरते राज्य करते थे। अभी राज्य करते हैं क्या। अभी तमोप्रधान बन गये हैं। आत्मा कहती है हम सो देवता थे फिर हम सो क्षत्री, हम सो वैश्य, हम सो शूद्र बने हैं। सतयुग में हम सो देवता आठ जन्म थे फिर उतरते आये हैं। हम सो का अर्थ भी बाप ने समझाया है। पहले2 हम ब्राह्मण थे। तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पहले2 देवता थे। पहले हैं चोटी ब्राह्मणों की। ब्राह्मण हैं इस सुं संगम युग पर। इनको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। तुम शूद्र से ब्राह्मण बनते हो। वह लोग कह देते आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप ने समझाया है तुम जानते हो हम ब्राह्मण ऊँच ते ऊँच हैं। तुम्हारा ही यह हीरे जैसा जन्म गाया जाता है। ब्राह्मण ऊँच ते ऊँच है क्योंकि उन में ज्ञान है। तुम ब्राह्मणों को ही शिव बाबा पढ़ाते हैं। तुम जब देवता बनेंगे तो निराकार शिवबाबा थोड़े ही पढ़ावेंगे। उस समय तो देवतायें ही पढ़ावेंगे। इस समय तुम ही संगम पर। बाकी सब हैं शूद्र। शूद्रों को शूद्र ही पढ़ाते हैं। शूद्र वर्ण में सब शूद्र ही शूद्र हैं। क्षत्री वर्ण में सब क्षत्री ही क्षत्री हैं। वैश्य-वर्ण में सब वैश्य ही वैश्य होंगे। अभी तुम ब्राह्मण बने हो। तुम ब्राह्मणों को बाप पढ़ाते हैं। फिर ब्रा० पढ़ाते हैं ब्राह्मणों को। अब इस समय तुम कौड़ी तुल्य बन पड़े हो। पैर तक हो। पैरों को शूद्र कहा जाता है। पैर धरती पर रहते हैं ना। चोटी ऊँची रहती है। फिर देवता, क्षत्री, वैश्य। अभी यह ज्ञान तुमको ही मिलता है। सतयुग में नहीं होगा। विराट रूप कैसे सो अभी तुम जानते हो। बाप पढ़ाते हैं ब्राह्मणों को हैं न कि शूद्रों को। जो बाप को जानते, निश्चय करते हैं उनको ही पढ़ाते हैं। ब्राह्मण बनेंगे तब तो पढ़ाई भी बुधि में बैठेगी। शूद्रों को तो बैठेगी नहीं। क्योंकि पहले2 बताया जाता है तुम किसके बच्चे हो। लौकिक बाप का या पारलौकिक। इतना बड़ा ज्ञान सभीके बुधि में बैठ न सके। न याद ही ठहर सकती है। अथाह ज्ञान है। जब से बाप आये हैं ज्ञान सुनाते ही रहते हैं। यह है मनुष्य से देवता बनने का ज्ञान। इस समय सब हैं शूद्र मनुष्य वैश्य वर्ण का कोई भी नहीं। तमोप्रधान दुनिया है ना। तो यह इतना सब ज्ञान बुधि में रखना है। हम देवता थे। फिर अभी ब्राह्मण से देवता बनते हैं। प्युरिटी है पहली। सतयुग में प्युरिटी थी ना। देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है। बाबा ने बहुत लिखाया है कि अपने से पूछो सतयुगी शिवालय के रहने वाले हैं या

कुलि-कुली = वेश्यावृत्ति = है = सतो = रजो = तमो = हैं। ===

कलियुगी वैश्यालय के रहने वाले हो। वैश्यालय होता ही है कलियुग में। तो जरूर कहना पड़े हम विषस-वैश्यालय के हैं। विषस औ वायसलेस। सीढ़ी जो बनाते हैं उनमें भी दिखाना चाहिए सब से यह देवतायें हैं। इनको शुद्र नमन करते हैं। सतयुग में नमन नहीं करेंगे। एक दो को कायदा नहीं है। खुश-खैरियत पूछने की रसम ही और होगी। गुडमार्निंग और नमस्ते आद नहीं होंगे। वहां की रसम-रिवाज ही और होंगी। इस समय तुम वह रसम नहीं देख सकते हो। उसका नाम ही है शिवालय। हेविन। मच्छर आद काटने वाले वहां होते नहीं। यह सब बाद में हो जाते हैं। कालरा, प्लेग आद थोड़े ही होते हैं। अभी हो गये हैं। अभी तो यह है ही कलियुगी दुनिया कलियुग में कितना कचड़ा आकर इकट्ठा हुआ है। जितना दृष्टि तमोप्रधान होती होते गिरते जाते हैं उतना ही दुःखदायक वस्तु होती जाती है। सतयुग में यह होते नहीं। उसका तो नाम ही है सुखधाम। यह है दुःखधाम। इसलिए बाप को आना पड़ता है। फिर से सुखधाम बनाने। तुम जानते हो बाबा हमारे दुःख हर कर सुख देते हैं। परन्तु श्रीमत पर जरूर चलना पड़ेगा ना।

बाबा ने कल रात को भी समझाया, बम्बई में ल०ना० का मंदिर है। अभी वह हॉल शादियों लिए भी देते रहते हैं। तो उनके ट्रस्टीयों को समझाना बहुत अच्छा है। भगवानुवाच : भल कृष्ण के लिए ही समझे। भगवानुवाचः काम महाशत्रु है, काम पर जीत पावेंगे वह जगतजीत का मालिक बनेंगे। वहां विकार होता ही नहीं। उनको तो कहा ही जाता है शिवालय। स्वर्ग। तो बड़े ही प्रेम से समझाना चाहिए। भगवान के यह महावाक्य हैं और तुम लोग फिर ऐसे स्थान पर शादी कराते रहते हो। अच्छा समझाने वाला जो हो बैठ समझावे। बाबा ने बहुत अच्छा लिखा था तुम कहां के रहने वाले हो। सतयुग के हो, कलियुग के हो। सतयुगी देवता हो या कलियुगी पतित हो, भ्रष्टाचारी हो या श्रेष्ठाचारी हो। ऐसे2 बहुत प्रश्न लिख सकते हैं। छपा कर फिर एरोपलेन से गिराओ तो अपने से हरेक पूछे हम कौन हैं। वह भी बाबा ने समझाया, लिख सकते हैं भगवानुवाच काम महाशत्रु है। उन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। और यहां फिर मंदिरों में शादियां करते रहते हैं। आगे घर में शादी होती थी। अभी तो शादियों के लिए मंदिर भी बन गये हैं। शादी पर गुरु को भी जरूर बुलाते हैं। आजकल तो सगाई भी गुरु लोग कराते हैं। उन्हों को भी यह भूल गया है कि भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। शंकराचार्य का फोटो तुम एक्युरेट सीढ़ी में दे सकते हो। या कार्टून भिश ल। शिवलिंग की पूजा कर रहे हैं। और सरस्वती, जगत-अम्बा आद के भी चित्र रखते हैं। आगे उनके लिखना है पुजारी। ऊपर में पूज्य। सतयुग में जब पूज्य हैं तो पूजारी होते नहीं। कलियुग में सब पुजारी ही हैं। पुजारी को पूज्य कैसे कह सकते हैं। सतयुग में पुजारी होते नहीं। गायन भी आये हो पूज्य ... तुम पहले2 पूज्य थे फिर गिरते2 पुजारी बने हो फिर पूज्य बनना है। भगवान आकर पुजारी को पूज्य बनाते हैं। पाईन्ट्स तो बहुत हो निकलती रहती है। वह है मेजोरिटी है असुरों की। और तुम्हारी है मैनारिटी। गाया हुआ भी है भिष्मपितामह आद को कुमारियों ने बाण मारी है तब वह शरण में आये हैं। मरते नहीं। शरण में आते हैं। तुम्हारी अभी मैनारिटी है। फिर मेजोरिटी होंगी। लाखों को पैगाम मिलेगा। प्रजा तो बहुत बननी है। आवेंगे कुछ न कुछ समझेंगे। सिर्फ चक्र लगा कर भी जावेंगे वह भी प्रजा बनती है। बहुत देर के देर प्रजा बनते रहते हैं। कोई तो फिर अच्छी रीति धारण करटीचर बन फिर औरों को समझावेंगे। नम्बरवार तो होते ही हैं। समझाना बहुत सहज है। बोलो दादे बाप है। एक हद का दूसरा बेहद का। अभी बेहद का बाप कहते हैं पावन बनने लिए अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। थोड़ा भी याद किया तो प्रजा में आ जावेंगे। इससे जास्ती याद किया तो प्रजा में शाहुकार बनेंगे। थोड़ा भी तमोप्रधान से सतोप्रधान बना तो आ जावेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। जो पूरा नहीं पढ़ते उनकी यहां भी वैल्यु नहीं। तो वहां भी वैल्यु नहीं रहेगी। पुरुषार्थ का टाईम यह है। पिछाड़ी में योग आद के लिए समय न मिलेगा। लॅज आती रहेगी। थोड़े ही समय में इतने सब पाप थोड़े ही कट जायेंगे। शुरु में

तो झुण्ड का झुण्ड आ गया। एकदम सरेन्डर हो गये। वह समय भी ऐसा था कहां जा नहीं सकते। भठी में बैठे रहे। भठी से सब ईंटें पक्क कर थोड़ें ही निकलते हैं। यह भी भठी थी। कोई टूट पड़ें कोई खंगर निकले। शरण में आये तो बाप के पास रहना ही पड़े। सारा नालेज पर मदार है। दिन प्रति दिन नालेज बहुत होती जावेंगी। जरूर दो अक्षर कहना पड़ेगा। दो बाप है। बेहद का बाप आते हैं तब तो शिवजयन्ति मनाते हैं। स्वर्ग का रचता बाप है जो जरूर स्वर्ग की बादशाही देंगे दी होंगी। रचयिता एक ही शिव है। बाकी कृष्ण आद सब है रचना। शिव बाबा ने ही राजयोग सिखाया होगा। तब तो बने होंगे ना। गाया भी जाता है ऊंच ते ऊंच भगवान। फिर ऊंच ते ऊंच यह ल०ना०। यह कैसे बने सो जरूर तुम जानते हो। बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त के जन्म में बाप ने राजयोग सिखाया था। बहुत जन्म तो भारतवासियों के ही होते हैं। उसमें भी जो पहले2 सृष्टि पर आये होंगे। पहले2 तो यह ल०ना० ही आवेंगे। इनको ऐसा जरूर कोई ने तो बनाया होगा। जरूर पुरूषोत्तम संगम युग पर ही बने होंगे। उत्तम ते उत्तम पुरूष हैं ही यह। यथा राजा रानी तथा प्रजा। अभी राजाई स्थापन हो रही है।

अभी यह लोग शादियों के लिए हाल देते हैं। बोलो यह तो तुम कतलाम करने लिए बना कर देते हो। एक दो पर काम कटारी चलाना यह तो हिंसा हुआ। इससे तो हमको हाल दे दो हम तो सभी को अहिंसक बनावेंगे। सतयुग में डबल अहिंसक होते हैं। अभी हैं डबल हिंसक। अभी समझावें भी किसको। एक को समझाओ तो दूसरा माथा खराब कर दे। अभी किसकी माने। बनाने वाले खुद मर जाते हैं तो फिर ट्रस्टीयों को दे देते हैं। तो बाप से नये2 पाईन्टस तो मिलती ही रहती है। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। यह तो बड़ी हिंसा है। यह हिंसा अपने घर में जाकर करो। तुम हाल में यह हिंसक काम कराने क्यों निमित बनते हो। बहुत पापात्मा बनेंगे। तुम ने पापात्मा बनने लिए हाल बनाया है। तुम समझेंगे यह कहते तो बरोबर ठीक हैं। हो सकता है कुछ मदद भी दे। बोलो हम तो हिंसक को अहिंसक, मनुष्य को देवता बनाते हैं, एमआबजेक्ट ही यह है। है तो वह भी मनुष्य ना। जो सतोप्रधान देवता थे वही अभी तमोप्रधान बने हैं। गायन भी सत का संग तारे कुसंग बोरे। रावण का सांग बोरा है ना। वह समझते हैं रावण तो परमपरासे है ही। अभी तुम समझते हो रामराज्य में रावण फिर कहां से आया। एकदम जैसे बन्दर बुधि हैं। जनावर कहो, बन्दर बुधि कहो, कांटा कहो यह हैं ही कांटों का जंगल। अभी बाप समझा रहे हैं तुम स्वर्ग के मालिक कैसे बनेंगे। अभी इस छी2 दुनिया से दिल नहीं लगानी है। तुमको बिज़ी ही इस धंधे रहना है। मनुष्य को देवता बनाना। भल शरीर निर्वाह अर्थ मेहनत करो। हमारा काम ही भारतवासियों से है। 84 जन्मों का ज्ञान भी भारतवासियों के लिए है ना। और तो 84 जन्म लेते ही नहीं हैं। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। साथ में यह भी पूछो तुमको कितने बाप हैं? एक है लौकिक, दूसरा है पारलौकिक। पतितों को पावन बनाने वाला तो पारलौकिक बाप ही है, वह एवर पावन है। पावन दुनिया बाप ही बनाते हैं। अभी तुमको बाप से बेहद विश्व का मालिक बनना है तो पुरूषार्थ करो। सतयुग में पतित होते नहीं। वह है पावन दुनिया। अभी तुम पतित दुनिया में हो। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। बाप का परिचय मिला, तो लायक बन जावेंगे। बाकी तो जितनी याद की यात्रा उतना ऊंच पद। सब तो राजा रानी नहीं बनेंगे। वहां वज़ीर होता नहीं। वह खुद ही सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होते हैं। जब बहुत पापात्मा बन जाते हैं तब वज़ीर, गुरू आद रखना पड़ता है। वहां तो दरकार ही नहीं। बाप से ताकत ले=अमर=हुवे=हैं ली हुई है सारे विश्व पर राज्य करते हैं। कोई छीन न सके। उनको कहा जाता है 21 जन्मों लिए अटल, अखण्ड राज्य। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने वाला है। तुम्हारी बुधि में यह सारा चक्र है। कैसे सीढ़ी उतरनी होती है। बाप कहते तुम जैसे जोन हो। सेकण्ड में चढ़ते हो फिर उतरते हो। उतरने और चढ़ने का पार्ट मिला हुआ है। तुमको

16 कला सम्पूर्ण, चढ़ती कला से बनते हो। फिर कला कम होते2 लिक बच जाती है। इस समय तुम कहेंगे ना कला। ब जंगलह जनावर कांटे हैं ना। इसलिए वर्धनाट अपेनी कहा जाता है। भारत सोने को चिड़ियां थी। अभी तो कुछ भी नहीं है। सोने का महल कोई न बना सके। इतना सोना है ही कहां। कहते हैं सोने की द्वारका लंका अद थी। सतयुग में न तो लंका न द्वारका होती है। यह तो नाम रख दिये हैं। समुद्र के किनारे सतयुग में गांव नहीं होते हैं। सिर्फ मथुरा, वृंदा वन गंगा जमुनायहां ही गांव होंगे। हैदराबाद भी नहीं होंगी। बम्बई तो होंगी ही नहीं। बाप कहते हैं कल तुम विश्व के मालिक थे अभी गुलाम बन पड़े हो। जो मालिक थे वही फिर ब्राह्मण बनेंगे। बाप साक्षी हो देखते हैं। तुम भी देखते हो। कौन राजा रानी, कौन दास-दासियां आद बनेंगी। यह सब समझ जायेंगे। बुधि भी कहती है, पतित से पावन न बनेंगे तो जन्म भी ऐसा ही मिलेगा। इस समय तो सब पतित हैं। विकार से पैदा होते हैं। विष और अमृत गाया जाता है। तुमको ज्ञान-अमृत मिलता है। ज्ञान सागर एक ही बाप है। बाकी शास्त्रों में है भक्ति। भक्ति के गुरु ढेर हैं ज्ञान के गुरु एक ही हैं। यहां तो सारी दुनिया में भक्ति ही भक्ति है। बेहद का बाप तो समर्थ है। वह गुरुलोग को समर्थ नहीं है। बाप पूछते हैं हमने तुमको विश्व की बादशाही दी, पवित्र बनाया फिर तुमको अपवित्र किसने बनाया। है ही रावण राज्य ना। यहां सब में विकार हैं। सब विष से पैदा होते हैं। इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता है। देवतायें हैं श्रेष्ठाचारी। बाबायुक्ति तो बताते हैं। अभी देखेंगे कैसे मंदिरों में जाकर समझाते हैं। देखें कोई पदमभाग्यशाली निकलता है जो मान ले। तुम पदम भाग्यशाली बनते हो ना। वहां विधवा आद बनती ही नहीं। अकाले मृत्यु होती ही नहीं। आयु पूरी होती है तो सा० होता है। 2। पीढ़ी पूरी सब को मिलती है। 2। जन्म 2। पीढ़ी। समय पूरा होने से शरीर छूटता है। वह है ही अमरलोक। यह है मृत्युलोक। यह ल०ना० अमरलोक के मालिक थे ना। अमरलोक के मालिक थे तो सालवेन्ट थे। मृत्युलोक के मालिक बनते हैं तो पूरे इनसालवेन्ट बन पड़ते हैं। सब से भीख मांगते रहते भारतवासी ही अमरलोक के मालिक थे। अभी मृत्युलोक के मालिक हैं। तुमको कोई कुछ भी कह न सकेंगे। यह तो रीयल बात है ना। बाबा ने कहा था कार्टून बनाओ। परन्तु कोई पुरुषार्थ ही नहीं करते हैं। कार्टून में भी सीढ़ी बहुत बन सकती है। सब से बड़ी बननी चाहिए। कलकते में बड़े बना रहे हैं। मनुष्यों को समझाने लिए भिन्न2 युक्तियां रची जाती है।

डाक्टरों को भी तुम जाकर समझा सकते हो। हम ऐसे सर्जनरी करते हैं जो 2। जन्म कबबिमार ही नहीं होंगे। तुम तो दवाई करते हो फिर बिमार हो जाते। सतयुग में आत्मा और शरीर दोनो ही सतोप्रधान बन जाती है। अभी तमोप्रधान है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो पाप नष्ट हो जाये। गीता पढ़ने वालों को सहज होगा। वही शिव को ल०ना० के पुजारी होंगे। जो और पुजारी हैं उनको ही ज्ञान दो। उनकी बुधि में बैठेगा। मंदिरों में सर्विस बहुत होंगी। बैज पर सर्विस कर सकते हैं। बेहद का बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। रोज2 गुह्य 2 बातें सुनाते रहते हैं। दिन प्रति दिन ऊंचा ज्ञान मिलता जायेगा। कितने सेन्टर्स खुलते रहते हैं। बाबा कहते हैं घेराव डालो। गरीब भी आकर सुनेंगे। नालेज है सोंस ऑफ इनकम। बल मिल मिलेगा योग से। योग न है तो बल मिलता नहीं। इसलिए सर्विस भी ढिली पड़ जाती है। जो धार्ट रखते होंगे उनका अटेन्शन जास्ती रहता होगा। तुम खुला कह सकते हो हम भी पहले भक्ति करते थे। अभी समझते हैं भक्ति दुर्गति थी। किसकी पूजा करते थे आत्मा की या 5 भूतों तत्वों की। पहले शिव की पूजा करते थे वह भी फिर अच्छे थे। अभी तो तुम भूत की रंवी बन गये हो। पूजा आद न करने से नाराज़ होते हैं तो उनको राजी करने लिए घर में मूर्ति आद रख दो। अन्दर में तो तुम निश्चय है ना। वहां बैठे भी तुम शिव बाबा को याद करो। राजी करो तो घर में खिट2 न होगी। खुश करने लिए करने में कोई हर्जा नहीं है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा की याद प्यार गुडमॉर्निंग। बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।